भोजन के सामाजिक कार्य

भोजन प्राचीन काल से ही समाज में ही पारस्परिक विचारों के आदान प्रदान एवं सम्बन्धों की स्थापना का आधार रहा है। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि भोजन समाज की अनिवार्य आवश्यकता है - चाहे वह समाज किसी भी स्तर का क्यों न हो? पुरातन समय से ही अनेक धार्मिक एवं सामाजिक अवसरों पर जैसे - तीज त्योहार आदि जन्मदिवस आदि पर भोजन देने की परंपरा चली आ रही है जिसका विशेष लाभ है कि इष्ट मित्र सगे - सम्बन्धी सब आपस में एक स्थान पर एकत्रित है तथा दूसरों के प्रति सम्बन्ध अधिक होते हैं और इनमें नयापन आता है। अनेक गोष्ठियों सभी सम्मेलनों ~~स स्वले~~ प्रतियोगिताओं आदि के समय कुछ भोजन अथवा जलपान आदि का प्रबंध किया जाता है। यह पारस्परिक मैत्री की प्रतीक है। आज के समाज में लोगों में एक दूसरों के प्रति न भोजन के प्रति रुचियाँ बढ़ती जा रही है। सामाजिक सहयोग सहिष्णुता तथा सद्भावना के प्रति यह एक अच्छा संकेत है। इन रुचियों की पूर्ति हेतु लोग आपस में मिलते हैं, एक दूसरों की पाक - कलाओं को ठीक प्रकार सीखने हेतु एक दूसरे की भाषा का ज्ञान भी अर्जित करते हैं। इसी प्रकार समस्त सामाजिक सम्बन्धों

की आपन्नता बढ़ती है।
इस प्रकार हम देखते हैं कि भोजन न केवल
हमारे शारीरिक शारीरिक पोषण के लिए
आवश्यक है अपितु यह हमारे समाज को सुदृढ़ता
एवं समानता प्रदान करते हुए हमारा मानसिक
पोषण भी करता है। केवल वे पदार्थ ही
भोजन कहे जाते या कहे जा सकते हैं, जिनकी
रासायनिक संरचना रक्त में अवशोषित कि[ए]
जा सकने व योग्य हो। शरीर में उत्पन्न
होने वाला विभिन्न पाचक - द्रवों में घुल
सके और शरीर के लिए उपयोगी हो।

Scanned with CamScanner